Four Monthly International Journal

ISSN NO.: 2249-572X

Gyandayini

Samaj Vigyan Shodh Patrika

Jan Kalyan Evam Vikas Seva Samiti, Ballia
Reg. No. : 871/2004

Vol.XIII No. 2 August-2023

A Peer Reviewed Refereed International Journal

GSVSP : ISSN No. 2249-572X, Vol. XIII, No. 2, PP. 87-89, August-2023

महात्मा गाँधी का समाजवादी चिन्तन

* डॉ० गौरव कुमार मिश्र

गाँधीजी न केवल स्वयं शांति की प्रतिमूर्ति थे, के सम्पूर्ण मानवता को शांति का पाठ एवं ऊँच–नीच मिटाना चाहते थे, जिसके लिए अहिंसा का मार्ग उन्होंने और लोगों को भी इसी रास्ते से राजनीतिक लक्ष्य करने की प्रेरणा प्रदान की। गाँधीजी ने वकालत भी जोहेन्सबर्ग में रहकर उन्होंने कानून के दाँव–पेंच को और उसमें भी नैतिकता के मानदण्ड को स्थापित । यह क्रिया उनके जीवन के व्यावहारिक पक्ष का है। दलित, शोषित, वंचितों की सहायता के कानूनी यों को समझा। सर्वोदय के मूल सिद्धान्त को आधार उन्होंने सत्याग्रह आंदोलन भी चलाया। इस कालावधि दार्शनिक पक्षों, यथा उपवास, व्रत, अहिंसा, प्राकृतिक त्सा आदि की व्यावहारिकता की भी परीक्षा की और दौरान उन्होंने महसूस किया कि वे सभी व्रत केवल क नहीं, बल्कि मानव जीवन की शांति और उन्नति लिए अपरिहार्य भी है। जोहेन्सबर्ग में सत्याग्रह आंदोलन दौरान उन्हें कई कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ा, न्तु वे विचलित न हुए और अपने कार्य को बढ़ाते रहे। उन्होंने वहीं एक सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की, जिनमें के सत्याग्रही साथी और कैदी एवं इनके परिवार के मिल जुलकर रहते थे। यह उनके व्यक्तित्व का ही था कि उस आश्रम को उन्होंने व्यावहारिक ज्ञान के के रूप में परिवर्तित कर दिया, जहाँ बागवानी, पाठशाला शैक्षणिक प्रयोगशाला और हस्त कला आदि की हारिक शिक्षा दी जाती थी।

गाँधी जी के बहुआयामी व्यक्तित्व का ही प्रतिफल कि उन्होंने समान रूप से सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक शैक्षणिक सुधार के कार्यक्रमों में अपनी सहभागिता दिखलाई। सामाजिक सुधार के कार्यक्रमों, स्त्री–शिक्षा, की दशा सुधार, विधवा विवाह, अछूतोद्धार और अंधविश्वास आदि प्रमुख हैं। उनके व्यक्तित्व के सभी छोटे–बड़े में समर्पित थे। वे अपना नहीं देश का उन्नयन चाहते थे। उनके व्यक्तित्व के महानतम् पक्षों को देखकर ही श्री नन्दलाल बोस ने घोषणा की थी कि, उनकी दृष्टि कितनी पारदर्शी और भेदक थी कि मैंने अनुभव किया मानों वह ह्रदय की अन्तरतम् गहराई में देख सकती है। मुझे सतत् प्रेरणा होती रही है कि मैं उनकी दृष्टि के सामने अपना ह्रदय खोल दूँ और अपने समस्त अंतरंग विचार उनके सामने रख दूँ, और कितनी दैवी मुस्कान। वे कठोर से कठोर ह्रदय को पिघला सकने में समर्थ थे। उनके शब्दों में तनिक भी संकोच अथवा अस्पष्टता नहीं थी, प्रत्येक शब्द तराशे हुए हीरे के समान चमकता हुआ प्रतीत होता था।

सर्वोदय भी उनकी कल्पना का तत्त्व नहीं था, बल्कि व्यावहारिक का विकसित स्वरूप था, जिसमें सर्वहित की भावना समाहित था और इसकी प्राप्ति के मार्ग भी सरल, संभव और सहज थे। गाँधीजी के सर्वोदय की भावना में मार्क्स का वर्ग संघर्ष और 'खूनी क्रांति' नहीं निहित है, बल्कि उद्देश्य की प्राप्ति और समानता की पूर्ति के लिए सबका समर्थन की आकांक्षा थी और सचमुच में ऐसा ही हुआ। स्वेच्छा से दिया गया संपत्ति दान से गरीबों के कल्याण का कार्य किया गया तथा हरिजनों एवं दलितों का प्रवास किया गया।

गाँधीजी एक समाजवादी थे, क्योंकि वे व्यक्तिगत असमानता का पूर्ण विरोध करते थे पर गाँधीजी का समाजवादी स्वदेशी था। वह इतिहास की साम्यवादी व्याख्या करने वाले मार्क्स और ऐंजिल्स के समाजवादी से भिन्न है। उनका समाजवाद वस्तुतः उनकी अहिंसा का परिणाम है, जो अहिंसावादी होगा वह सामाजिक अन्याय को कैसे सहन कर सकता है? भारतीय समाजवादी इतिहास चिन्तन की झलक तो भारत के प्राचीन ग्रन्थ उपनिषदों में ही निहित है। गाँधीजी की कथन है– "सच्चा समाजवादी तो हमें अपने पूर्वजों से प्राप्त हुआ है, जो हमें यह सिखा गये है– सब भूमि गोपाल की है, उसमें कहीं मेरी और तेरी की सीमाएँ नहीं है। ये सीमाएँ मानव निर्मित है और इसीलिये वे उन्हें तोड़ भी सकते हैं। गाँधीजी सम्पत्ति के केन्द्रीकरण

* सहायक अध्यापक, राजनीतिशास्त्र विभाग, शासकीय रामानुज स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बैकुण्ठपुर, कोरिया (छत्तीसगढ़), भारत